Crop Weather Watch Group Advisory
U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की चतुर्थ बैठक की संस्तुतियाँ

दिनॉक : 27 मई, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की चतुर्थ बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 27 मई, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक, मौसम विज्ञान विभाग, अमौसी, लखनऊय च.शे.आ. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुरय स.व. पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ तथा न.दे. कृषि, प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम एवं फसल वैज्ञानिकय उद्यान विभाग, रेशम विभाग, इफ्को किसान संचार लि. के प्रतिनिधि एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 27 मई से 2 जून, 2015 तक) प्रदेश के सभी क्षेत्रों में हल्के से मध्यम बादल छाये रहने एवं दक्षिण–पूर्वी हवाओं के रहने से अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता 55–70 प्रतिशत वहीं न्यूनतम आर्द्रता का प्रतिशत प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में 20–25 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। प्रदेश के तराई क्षेत्र विशेषकर उत्तरी भाग के जनपदों में सप्ताह के अंतिम दिनों में मध्यम से घनी बदली मौजूद रहने के कारण गरज–चमक के साथ छिटपुट बूँदाबॉदी के आसार हैं जिससे इन क्षेत्रों में दिन का अधिकतम तापमान 39–42 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 25–27 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं जो सामान्य के पास है। प्रदेश के शेष क्षेत्रों यथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्यांचल एवं प्रदेश के दक्षिणी भाग खासकर बुंदेलखण्ड एवं विंध्यांचल क्षेत्रों में गर्म हवाएँ 8–12 किमी. प्रति घण्टा की औसत गति से चलने के कारण अधिकतम तापमान 43–46 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 27–30 डिग्री सेल्सियस के मध्य रहने के आसार हैं जो सामान्य से 2–3 डिग्री सेल्सियस अधिक है। इस सप्ताह मौसम शुष्क रहेगा।

दक्षिणी–पश्चिमी मानसून का अपनी सामान्य स्थिति 20 मई से पूर्व आगमन अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में होने की वजह से इन स्थानों के साथ–साथ हिन्द महासागर सहित आसपास के क्षेत्रों में वर्षा हो रही है। यदि स्थितियॉ सामान्य रहीं तो केरल के तटीय क्षेत्रों में पहली मानसून की वर्षा 30 मई (4 दिन) को होने की सम्भावना है।

- नर्सरी डालने के लिए शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज पूर्व शोधित न हो तो धान की नर्सरी डालने से पूर्व बीज शोधन सुनिश्चित करें। यदि जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या हो तो 25 किग्रा0 बीज के लिए 4 ग्राम स्टेप्टोमाइसीन सल्फेट या 40 ग्राम प्लान्टोमाइसीन को पानी में मिलाकर रात भर भिगो दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें।
- अधिक अवधि की (145 दिन से ज्यादा) प्रजातियों की नर्सरी पहले तथा मध्यम (130 से 140 दिन) व कम अवधि (115 से 120 दिन) की नर्सरी क्रमशः बाद में डालें।
- विलम्ब से धान की रोपाई वाले प्रक्षेत्रों में हरी खाद के लिए सनई एवं ढ़ैंचा की बुआई करें। सभी जनपदों में कृषि विभाग के गोदामों पर ढैंचा का बीज उपलब्ध है।
- भूमि जनित रोगों के नियंत्रण हेतु *ट्राइकोडर्मा विरिडी* 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा *ट्राइकोडर्मा हरजियेनम* 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. 60–75 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुआई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से शीथ ब्लाईट, मिथ्या कण्डुआ आदि रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- स्री पद्धति से 1 हे. रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है तथा नर्सरी की क्यारियॉ 4–5 इंच ऊँची हो। स्री पद्धति के लिये 6 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज की नर्सरी में बुआई करें। स्री पद्धति की नर्सरी में जहॉ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें।
- उर्द, मूँग, सूरजमुखी की फसलों एवं लीची व आम के बागों में पर्याप्त नमी बनाये रखें।
- मौसम की अनिश्चितताओं को देखते हुए कृषकों से अनुरोध है कि अपनी फसलों का बीमा अपने नजदीकी सहकारी या व्यावसायिक बैंकों के माध्यम से अवश्य करायें। खरीफ 2015 के लिए फसलों के बीमा कराने की अवधि संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में 1 अप्रैल से 31 जुलाई व मौसम आधारित फसल बीमा योजना में 1 अप्रैल से 30 जून, 2015 तक है।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएँ।

धान की खेती

- पूर्वी उत्तर प्रदेश के जनपदों में लम्बी अवधि की धान की प्रजातियों स्वर्णा, सॉभा महसूरी व महसूरी की नर्सरी 30 मई तक डालें।
- अधिक जल भराव वाले क्षेत्रों हेतु जहां एक मीटर से अधिक पानी लगा रहता है, धान की संस्तुत प्रजातियों यथा जलनिधि एवं जलमग्न की सीधी बुआई करें। उन क्षेत्रों में जहां खेत में पानी 50 से 100 सेमी. तक कम से कम 30 दिन भरा रहता है रोपाई हेतु जल लहरी एवं जलप्रिया की नर्सरी 10 जून तक अवश्य डाल दें।
- सामयिक बाढ़ वाले क्षेत्रों हेतु बाढ़ अवरोधी, स्वर्णा सब–1 तथा कम जल भराव वाले क्षेत्रों हेतु जल लहरी एवं एन.डी.आर.–8002 प्रजातियों के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के प्रथम सप्ताह में नर्सरी डाली जा सके।
- धान की मध्यम अवधि वाली प्रजातियां यथा नरेन्द्र धान–359, मालवीया धान–36, नरेन्द्र धान–2064, नरेन्द्र धान–2065 आदि के बीज की व्यवस्था करें। संकर प्रजातियों यथा एराइज–6444, 6201, पी.एच.बी.–71, नरेन्द्र संकर धान–2, 3, के.आर.एच.–2, पी. आर.एच.–10, जे.के.आर.एच.–401 आदि के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के प्रथम सप्ताह में नर्सरी डाली जा सके।
- जिन क्षेत्रों में शाकाणु झुलसा की समस्या है तथा बीज शोधित न हो, ऐसी दशा में उनमें 25 किग्रा0 बीज को रातभर पानी में भिगोने के बाद दूसरे दिन अतिरिक्त पानी निकाल देने के बाद 75 ग्राम थीरम या 50 ग्राम कार्बेन्डाजिम को 8–10 लीटर पानी में घोलकर बीज में मिला दिया जाये इसके बाद छाया में अंकुरित करके नर्सरी डाली जायें।
- बीज शोधन हेतु 5 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से ट्राइकोडर्मा का प्रयोग किया जाये।

मक्का की खेती

- अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए मक्का की देर से पकने वाली संकर प्रजातियों गंगा–11, सरताज, एच.क्यू.पी.एम.–5, प्रो–316 (4640), बायो–9681, वाई–1402 तथा संकुल किस्म प्रभात की बुआई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व 1 किग्रा. बीज को 2.5 ग्रा. थीरम से शोधित करना चाहिये या बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करना चाहिए।

अरहर

- सिंचित क्षेत्रों में पश्चिमी उ.प्र. हेतु अरहर की अगेती संस्तुत प्रजाति पारस तथा सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21 तथा पूसा–992 की बुवाई जून के प्रथम सप्ताह में करने के लिये बीज की व्यवस्था कर लें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा0 बीज को 2 ग्रा0 थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

गन्ना

- फरवरी, मार्च में बोये गन्ने में यदि अभी तक टापड्रेसिंग नहीं की गयी है तो सिंचाई उपरान्त 50 किग्रा. नत्रजन/हे. (110 किग्रा. यूरिया) की दर से जड़ के पास टॉपड्रेसिंग करें तथा गुड़ाई करें।
- गन्ने में 15–20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई कर नमी बनाये रखें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु आवश्यकतानुसार गुड़ाई करें।
- गन्ने में जल संरक्षण हेतु गन्ने की पत्तियों का मल्च प्रयोग करें।
- ऊनी माहू (वूली एफिड) दिखाई देने पर मेटासिस्टाक्स 0.05 प्रतिशत का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर दो या तीन बार करें।
- अंकुर बेधक, जड़ बेधक, चोटी बेधक से ग्रसित पौधों को समय–समय पर निकालें तथा अण्ड–समूहों को एकत्र कर नष्ट कर दें।
- शल्क कीट एवं गुलाबी चिकटा का प्रकोप होने पर मैलाथियान 0.01 प्रतिशत या डाईमेथोएट 0.08 प्रतिशत का गन्ने की सूखी पत्तियों के निकालने के बाद छिड़काव करें।
- काला चीकटा का प्रकोप होने पर क्लोरपायरीफास/क्यूनालफास का 0.2 किग्रा. मूल तत्व प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।
- पायरीला का प्रकोप होने पर तथा परजीवी (इपीरिकेनिया मेलानोल्यूका) न पाये जाने की स्थिति में मेटाराइजियम एनआईसोप्ली का संस्तुति अनुसार पर्णीय छिड़काव करें।

बागवानी

- फलों के नये बाग लगाने के लिये उपयुक्त खेत का चयन एवं रेखांकन कर गड्ढों की खुदाई कर गड्ढे में खाद–उर्वरक की उपयुक्त मात्रा तथा नीम की खली व मिट्टी की समान मात्रा मिलाकर जमीन से लगभग 1 फीट ऊँचा भराई करें।
- आम के बागों में फल मक्खी की संख्या जानने एवं उसके नियंत्रण हेतु कार्बरिल 0.2 प्रतिशत+प्रोटीन हाइड्रोलाइसेट या सीरा 0.1 प्रतिशत अथवा मिथाइल यूजीनाल 0.1 प्रतिशत+मैलाथियान 0.1 प्रतिशत के घोल को डिब्बों में डालकर पेड़ों पर ट्रैप लगायें।
- आम में कोयलिया और आन्तरिक विगलन के नियंत्रण के लिये 1 प्रतिशत बोरेक्स का 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें।
- आम के बागों में हल्की नमी बनाये रखें तथा सूटी मोल्ड (काली फफूंदी) का प्रकोप होने पर बचाव के लिये बाग की सफाई करें व घुलनशील गंधक, मोनोक्रोटोफास तथा गोंद (0.2, 0.05 और 0.3 प्रतिशत क्रमशः) का मिश्रण बनाकर छिड़काव करें।

- केला भृंग (बनाना बीटिल) के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी या फोरेट 10 जी एक चम्मच भर कर गोफे में डाले।
- केले की फलों/डंठलों पर काले भूरे धब्बे दिखाई देने पर कापर आक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें।
- नींबू की कैंकर व्याधि के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत अथवा बोर्डो मिक्चर का छिड़काव करें।
- लीची के फलों को फटने से बचाने के लिये बाग में सिंचाई कर आवश्यकतानुसार नमी बनाये रखें।

सब्जियों की खेती

- सब्जियों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- खरीफ सब्जियों यथा भिण्डी, लोबिया, बैंगन, मिर्च एवं फूलगोभी की अगेती किस्मों की बुआई के लिये उपयुक्त प्रक्षेत्र का चयन करते हुए उन्नत प्रजातियों की व्यवस्था कर लें।
- सब्जियों में यथासम्भव जैव नाशिजीवियों का ही प्रयोग करें।
- धनिया, हल्दी एवं अदरक की बुआई 15 जून तक पूर्ण कर लें।

पशुपालन

- बड़े पशुओं में गला घोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा बकरियों में ई.टी. रोग की रोकथाम हेतु टीकाकरण करायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालय पर उपलब्ध है।
- पशुओं को धूप से बचाने के लिए दोपहर में छायादार स्थान पर बॉधें तथा सुबह एवं सायंकाल में ही चराई करायें।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें।
- जायद चारा फसलों में सिंचाई करते रहें जिससे कि फसल की बढ़वार प्रभावित न होने पाये। पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें।
- पशुओं को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) ना खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीला तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।

मत्स्य पालन

- तालाब निर्माण का उपयुक्त समय है जो किसान नये तालाब बनाना चाहते हों या अपने तालाब का सुधार कार्य कराना चाहते है वे 20 जून तक निर्माण कार्य पूरा करा लें तथा आगामी मौसम में मत्स्य पालन की तैयारी करें।
- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियां पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें एवं तालाब को गर्मी में सुखाने के पश्चात आगामी मौसम में मत्स्य पालन करें।
- ऐसे तालाब जिनमें पानी सूखने की सम्भावना नहीं है, उनमें अवांछनीय मछलियों के नियंत्रण हेतु 25 कु./हे. की दर से 1 मीटर गहरे तालाब में महुआ की खली डाल दें। 24 घंटे में मछलियॉ सतह पर आ जाएंगी। इन्हें बेच दें। महुआ की खली डालने के 15 दिन बाद तालाब तैयार हो जाएगा।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने ब्रूड फिश को पूरक आहार शरीर भार के दो प्रतिशत की दर से प्रतिदिन खिलायें साथ ही साथ विटामिन–ई युक्त आहार भी दें। नर मादा को यदि अभी तक अलग–अलग तालाबों में नहीं किया है तो शीघ्र कर लें।
- कतला, रोहू एवं नैन प्रजातियों में मेच्योरिटी आ गई है। तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें। जिन मत्स्य बीज उत्पादकों ने अभी तक नर्सरियों को तैयार नहीं किया है वे शीघ्र नर्सरियों को तैयार कर लें।
- कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का समय आ गया है। हैचरी स्वामी मानसून के आगमन संबंधी पूर्वानुमान पर विशेष ध्यान दें। 20 जून से कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें साथ ही आवश्यकतानुसार सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन भी करायें।
- निजी क्षेत्र की कुछ हैचरियों पर उत्प्रेरित प्रजनन के मध्यम से मत्स्य बीज का उत्पादन प्रारम्भ कर दिया गया है। इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें।
- जो भी मत्स्य पालक मत्स्य बीज उत्पादन की प्रक्रिया से जुड़े हैं वे अपनी नर्सरी की तैयारी कर लें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम पालन

- सिंचित क्षेत्र में शहतूत पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- शहतूत/अर्जुन की नर्सरी की नियमित सिंचाई करते रहें।
- असिंचित क्षेत्र में शहतूत/अर्जुन पौधों के चारों तरफ मिट्टी की गुड़ाई कर नमीं संरक्षित रखने का प्रयास करें।
- नये क्षेत्र में वृक्षारोपण कराने हेतु मृदा कार्य पूर्ण कराया जाय।

वानिकी

- गड्ढा भरान 15 जून तक पूर्ण कर लें। वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर लें। पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व

तक खुले क्षेत्र में सिंचाई करें।

- नर्सरी में संरक्षित वानिकी पौध को तेज धूप से बचाव हेतु छाया में रखें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 3 जून, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर **18001801717** है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।